अमृत वाणी

अगर आप कदम उठाने से पहले सब सुनिश्चित करने की प्रतीक्षा करते हैं तो संभव है कि आप कभी ज्यादा कुछ कर ही न पाए।

–अज्ञात,

एक तरफा प्रेम का वीभत्स स्वरूप

हाल ही में उत्तरप्रदेश के उन्नाव में हाथ पैर बंधी और मुंह से झाग निकल रहे हालत में खेत में पड़ी मिली तीन दलित कन्याओं की खबर से सारे देश में सनसनी फैल गई थी। इन कन्याओं में दो मृत हालत में मिली और एक अत्यंत नाजुक हालत में थी। उसका इलाज अभी भी जारी है। ये तीनों बहने हैं और खेत में चारा लाने गई थी।

घटना के बारे में अब तक मिली जानकारी और इस सिलसिले में गिरफ्तार किए गए दो आरोपियों की स्वीकारोक्ति से प्रारंभिक तौर पर इसे एकतरफा प्रेम का वीभत्स स्वरूप कहा जा सकता है। बताया गया है कि आरोपियों के एक तरफा प्रेम को उन लड़कियों द्वारा अस्वीकार किए जाने पर इन्होंने धोखे से उन्हें कीटनाशक मिला हुआ पानी पिला दिया और फिर वे कही भाग न सके इसलिए उनके हाथ पैर बांध कर खेत में फेक दिया।

एक तरफा प्रेम के जुनून में तरह तरह के दुस्साहसिक कदम उठाए जाने की घटनाएं हमारे देश में कम नहीं हुई है। इसी पागलपन में युवतियों पर सरे आम तेजाब डालने से लेकर उनपर तरह-तरह से जानलेवा हमले करने की कई घटनाएं देश के विभिन्न स्थानों में घटित हो चुकी है। जाहिर है कि ऐसे कदम अक्सर अपरिपक्व और सिरफिरे युवाओं द्वारा ही बिना नतीजे की परवाह किए उठाए जाते हैं जिन्हें न तो प्रेम की वास्तविकता का अनुमान है और न उसके पवित्रता का क्योंकि सच्चा प्रेम किसी से कुछ छीनने अथवा उसे परेशान करने का द्योतक नहीं होता बल्कि प्यार तो बलिदान और समर्पण का स्वरूप होता है। अर्थात जो लोग ऐसा कुकृत्य करते हैं उन्हें प्रेमी नहीं बल्कि गुंडे, बदमाश या हत्यारे कहना अधिक उचित होगा। नतीजा यह होता है कि दो-दो जाने एक साथ तबाह हो जाती है।

जहां तक उन्नाव की इस घटना का मामला है इसके पीछे की पूरी सच्चाई तो तभी सामने आएगी जब इस घटना में अब भी गंभीर हालत में उपचाराधीन तीसरी पीड़ित कन्या अपना बयान देगी। वैसे भी अपराधों का गढ़ बन चुके उत्तरप्रदेश जैसे राज्य में ऐसी जघन्य घटनाओं का घटित होना कोई आश्चर्य नहीं है क्योंकि उत्तरप्रदेश में इस समय आए दिन एक से बढ़कर एक नृशंस अपराध हो रहे हैं। देखा जाय तो वहां कोई भी सुरक्षित नहीं है। महिलाओं की सुरक्षा तो वहां दांव पर लगी हुई है। आए दिन वहां महिलाओं के साथ छेड़छाड़, दुष्कर्म, गैंगरेप जैसी घटनाएं हो रही है। एक घटना को लोग भुला भी नहीं पाते कि दूसरा दिल दहला देने वाला मामला प्रकाश में आ जाता है। इन हालातों में महिलाओं के लिए अपनी अस्मिता की रक्षा करना असंभव सा हो गया है। हर घटना के बाद कुछ समय के लिए हलचल मचती है फिर सबकुछ जस के तस हो जाता है। इसका अंत कहां और कैसे होगा यह हर लड़की के अभिभावक के समक्ष सवाल बन गया है।

राज-काज

कांग्रेस की बल्ले-बल्ले

किसान आंदोलन की पृष्ठभूमि में यह दीवार पर लिखी इबारत थी कि भाजपा को पंजाब के स्थानीय निकाय चुनाव में करारी हार का सामना करना पड़ सकता है। कांग्रेस की जीत तय थी लेकिन विपक्ष को नकार कर इतनी बड़ी जीत मिलेगी, इसका अंदाजा कम ही था। बहरहाल, आगामी वर्ष होने वाले विधानसभा चुनाव के 'लिटमस टैस्ट' में कांग्रेस ने मनोवैज्ञानिक बढ़त तो हासिल कर ही ली है। वैसे इन निकाय चुनावों के चुनाव अभियान के दौरान भाजपा नेताओं और प्रत्याशियों को जिस तरह विरोध का सामना करना पड़ रहा था, उससे साफ था कि राज्य के निकाय चुनाव में भाजपा के सितारे गर्दिश में रहेंगे। वैसा हुआ भी, जिससे राज्य के विधानसभा चुनाव में भाजपा की वापसी की संभावनाओं पर भी सवाल उठते हैं। दरअसल, पहले पंजाब और फिर दिल्ली की सीमा पर लंबे समय से जारी किसान आंदोलन को पंजाब के लोगों ने राज्य की अस्मिता से जोड़कर देखा और उसी के अनुरूप जनादेश भी दिया। वहीं भाजपा के साथ ही आप को भी लोगों ने नकार दिया। शिरोमणि अकाली दल दूसरे नंबर पर जरूर आया लेकिन उसकी उपलब्धि ज्यादा उम्मीद जगाने वाली नहीं है।

दिशा रवि की गिरफ्तारी पर बावेला दुर्भाग्यपूर्ण

दिशा रवि की गिरफ्तारी क्या हुई हमारे नेताओं को जैसे बिच्छू ने डंक मार दिया। जरा नजर उठा कर देख लीजिए। ट्वीट दर ट्वीट गिरफ्तारी के विरोध और दिशा रवि के समर्थन में आगया। पी चिदंबरम देश के गृह मंत्री रहे है। उनके कार्यकाल के दौरान देश में अनेक गिरफ्तारियां आतंकवाद के संदेह में हुई। इस तरह कितने नेताओं ने सवाल उठाया कि फ्लां उम्र के या फ्लां स्तर के किसी व्यक्ति से देश को खतरा कैसे हो सकता हैघ् अगर पूर्व गृह मंत्री कह रहे हैं कि एक कॉलेज की छात्रा से देश को खतरा है तो देश कमजोर आधार पर खड़ा है तो मान लीजिए हमारी पूरी राजनीतिक व्यवस्था उससे कहीं ज्यादा दूषित और भ्रमित है जितनी हम कल्पना करते हैं। लेकिन इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। पिछले डेढ़ दो दशकों से जिस भारत को हम देख रहे हैं उसमें हमेशा आतंकवादियोंए देशद्रोहियोंए हिंसक समूहों से जुड़े लोगोंए माओवादियोंए अलगाववादियों आदि के समर्थन में हर स्तर पर बड़ा समूह खड़ा होता रहा है। अगरण् ऐसा ना हो तो जरुर आश्चर्य व्यक्त करना चाहिए। इसलिए दिशा रवि की गिरफ्तारी एवं कुछ अन्य सोदिग्धों के खिलाफ कार्रवाई पर हो रही विरोधी प्रतिक्रियाओं को भारत की स्वाभाविक प्रकृति मानकर चलना होगा।

हालांकि राहुल गांधीए प्रियंका बाड्राए जयराम रमेशए पी चिदंबरमए अरविंद केजरीवालए सीताराम येचुरीए अखिलेश यादवए शशि थरूरए ममता बनर्जी आदि नेताओं को इस बात का जवाब भी देना चाहिए कि दिल्ली पुलिस द्वारा छानबीन के आधार पर सामने लाए जा रहे तथ्य सही हैं या नहींघ् दिशा ने इतना तो न्यायालय में भी स्वीकार किया है कि उसने टूलकिट में हल्का संपादन किया था। निकिता ने भी कई बातें स्वीकार की है। विडम्बना देखिए कि इमरान खान की ओर से आया ट्वीट भी दिशा रवि का समर्थन करता है। खालिस्तान की विचारधारा और हिंसक गतिविधियों में पाकिस्तान की सर्वप्रमुख भूमिका रही है। उसे तो समर्थन करना ही है। इस मामले में तो उसकी संलिप्तता की गंध भी मिल रही है। यह सामान्य सिद्धांत है कि न्यायालय जब तक किसी को दोषी करार न दे हम उसको दोषी नहीं मानते। लेकिन जो कुछ प्रत्यक्ष दिख रहा है और पुलिस छानबीन से भी जैसे तथ्य सामने आ रहे हैं उनकी निष्पक्ष विवेचना तो की ही जाएगी। दिल्ली पुलिस ने पर्यावरण कार्यकर्ता दिशा रवि को ग्रेटा थनबर्ग द्वारा किसान आंदोलन को लेकर शेयर की गई टूल किट के मामले में मुख्य भूमिका निभाने वालों में से एक मानकर गिरफ्तार किया। निकिता जैकब और शांतनु जैसे कई लोगों की संलिप्तता सामने आ चुकी है। इन दोनों को न्यायालय ने तत्काल गिरफ्तारी से राहत दे दी हैए लेकिन यह अंतिम नहीं है। अभी पूरे मामले में अनेक गिरफ्तारियां होंगी। जैसे.जैसे परतें खुलेंगी अनेक छिपे हुए चेहरे सामने आएंगे और इसी के साथ विरोधी प्रतिक्रियाएं भी हमको सुनने को मिलेगी।

दिल्ली पुलिस का कहना है कि दिशा रविए निकिता और शांतनु ने ही स्वीडन की ग्रेटा थनबर्ग को टूल किट मुहैया कराई थी। दिशा रवि ने एक वॉट्सएप ग्रुप शुरू किया था जिसमें टूलकिट डॉक्युमेंट तैयार करने के लिए कई लोगों के साथ समन्वय किया गया था। पुलिस ने जो तथ्य सामने लाए हैं उनके अनुसार टूलकिट को निकिता जैकबए शांतनु और दिशा रवि ने साथ मिलकर तैयार किया था। इस गूगल डॉक्युमेंट को शांतनु की ओर से बनाई गई ईमेल आईडी के जरिए तैयार किया गया था। 26 जनवरी को लाल किला की हिंसा सबको नागवार गुजरा। हिंसा न रोक पाने के लिए सरकार को आप जिम्मेदार बता सकते हैं लेकिन हिंसा की साजिश के पीछे के संदिग्ध चेहरेए जिनकी संलिप्तता और सक्रियता के कुछ स्पष्ट सबूत मिले हैंए अगर गिरफ्तार होते हैं तो आपको समस्या है। इनसे पूछा जाना चाहिए कि खालिस्तान का झंडा उठाने वाला भारत विरोधी पोएटिक जस्टिस फाउंडेशन के साथ काम करना या सक्रिय संपर्क रखना देश के विरुद्ध अपराध माना जाएगा या नहींघ् अगर माना जाएगा तो फिर दिशा रविए निकिता और शांतनु का उसके साथ संपर्क सामने है। पोएटिक फाउंडेशन का सह संस्थापक खालिस्तान की विचारधारा फैलाने का काम करने वाले भारत विरोधी मो धालीवाल के साथ निकिताए दिशा और शांतनु की जूम मीटिंग भारत में सकारात्मक योगदान के लिए तो नहीं हुआ होगा। इसमें 70 लोग शामिल थे। धालीवाल खुलेआम कहता है कि मैं खालिस्तानी हूँ और खालिस्तान आंदोलन अभी खत्म नहीं हुआ है। यह प्रश्न तो उठेगा कि पर्यावरण एक्टिविस्ट खालिस्तान समर्थक के साथ मीटिंग में क्या रहे थे घ् इसका एजेंडा 26 जनवरी के विरोध को वैश्विक करना था।

टूलकिट भेजने वालों की सूची में भजन सिंह भिंडर उर्फ इकबाल चौधरी और पीटर फ्रेडरिक का नाम भी है। भिंडर खुलेआम खालिस्तान की बात ही नहीं करताए उसके लिए हिंसा की भी बात और प्रयास करता है। ये दोनों आईएसआई के मोहरे हैं और हर सरकार में इनसे सचेत रहने की खुफिया रिपोर्ट रहीं हैं। पीटर को भी यूपीए सरकार ने ही रडार पर रखा और भिंडर को भी। क्या यह सब गहरी साजिश की ओर संकेत नहीं करताघ् दिशा ने ही ग्रेटा थनबर्ग को बताया कि उनका टूलकिट सार्वजनिक हो गया है। इसके बाद ग्रेटा में उस टूलकिट को डिलीट किया था। दिशा ग्रेटा बातचीत सामने आया है। दिशा ग्रेटा को कह रही है कि मुझे आतंकवाद विरोधी कानून गैरकानूनी निरोधक कानून या यूपीए का सामना करना होगा। दिशा ने व्हाट्सऐप ग्रूप भी डिलीट कर दिया। जिस टूल किट में किसान विरोध प्रदर्शन का लाभ उठाकर उसको किस ढंग से प्रचारित करनेए आक्रामक बना देने की पूरी कार्ययोजना हो उसके निर्माताए उसका संपादन करने वालेए फॉरवर्ड कर संबंधित लोगों तक पहुंचाने वाले तथा जारी होने के बाद उस पर नजर रखने वाले दोषी नहीं हो सकते ऐसी धारणा भारत में ही संभव है। देश विरोधी संगठन भी तात्कालिक रूप से अपना निशाना सरकारों को ही बनाती हैं। पोएटिक जस्टिस फाउंडेशनए आस्क इंडिया व्हाई डॉट कॉम जैसे वेबसाइट भले सतही तौर पर नरेंद्र मोदी सरकार विरोधी अभियान चलाते दिखते होंए आप गहराई से इनका स्वर देखेंगे तो यह भारत विरोध में परिणत हो जाता है। आंतरिक राजनीति में सरकार से मतभेदए उसका विरोध स्वाभाविक है। सीमा के बाहर सरकार ही देश की प्रतिनिधि है।

कोई भी देश अगर अंदर बाहरी शक्तियों या देश विरोधी शक्तियों के विरुद्ध एकजुट रहे तो उसका बाल बांका असंभव है। देश विरोधीए हिंसक अलगाववादी समूह या व्यक्ति तभी सफल होते हैं जब देश के अंदर से साथ मिलता है। कृषि कानूनों के विरोध में चल रहा आंदोलन हमारा अपना मामला है। हम उसके समर्थक और विरोधी हो सकते हैं। भारत विरोधी शक्तियां उसका लाभ उठाएंए विदेशों के ऐसे संगठनों से उनका संपर्क रहेए उनके लिए काम करेंए उनकी तैयारी में योगदान करें तो फिर यह नहीं देखा जाएगा कि ऐसा करने वाले की उम्रए जातिए लिंग क्या हैघ् विश्व भर में ना जाने 18 वर्ष से कम उम्र के कितने आतंकवादी भीषण आतंकवादी घटनाओं में संलिप्त पाए गए हैं। जम्मू कश्मीर में ही पाकिस्तान से घुसपैठ कराए गए कई आतंकवादी किशोर उम्र के मिले हैं। तो क्या उनको आतंकवादी नहीं माना जाएगाघ् क्या उनके खिलाफ कार्रवाई नहीं होगीघ् दिशा तो वैसे भी 22 वर्ष की हैं। वो ग्रेटा थनबर्ग द्वारा स्थापित संगठन फ्राईडेज फॉर फ्यूचर की भारत प्रमुख हैं। पर्यावरण के झंडाबरदार के रूप में उनके लेख प्रकाशित होते हैंए बयान सामने आते हैं। देश . विदेश में व्यापक संपर्क रखने वालीए सक्रिय रहने वाली एक युवा लड़की देश विरोधी अपराध कर ही नहीं सकती ऐसे मानने वालों की सोच पर तरस आता है। कभी नहीं भूलना चाहिए कि न्यायालय ने इनको पुलिस रिमांड दिया है। अगर केस कमजोर होता है तो न्यायालय सामान्यता न्यायिक हिरासत में संदिग्ध को भेजती है। इनसे पूछताछ के बाद आंदोलन का आड़ लेकर की जा रही साजिशों के और तथ्य सामने आ सकते हैं।

वास्तव में अब जब यह साफहो गया है कि किसान आंदोलन की आड़ में देश विरोधी शक्तियां भारत में हिंसा और अराजकता अलगाववाद पैदा करने का षड्यंत्र कर रहीं हैं तो फिर उनके भारतीय हाथों का पकड़ा जाना अपरिहार्य हो चुका है। यह राजनीतिक नहींए देश की सुरक्षाए एकता अखंडता और संप्रभुता से जुड़ा मामला है। इसमें राजनीति नहीं होनी चाहिए थी। तो राजनीति को नजरअंदाज करते हुए पुलिस और अन्य सुरक्षा एजेंसियों को कार्रवाई जारी रखनी चाहिए। उन लोगों का चेहरा सामने आना जरूरी है जो ऐसी साजिशों में संलिप्त हैं। कठोर कार्रवाई से ही ऐसी शक्तियां हतोत्साहित होंगी और भारत के विरोध में सिर उठाने वाले कुछ करने के पहले सौ बार विचार करेंगे।

अवधेश कुमार
(ये लेखक के अपने विचार है)

अबूझमाड़ महोत्सव . तृतीय अंतरराष्ट्रीय माड़ मैराथन 2021

तत्कालीन पुलिस अधीक्षक जितेन्द्र शुक्ला के मंशानुरूप जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन और भिलाई इस्पात संयंत्र के सौजन्य से रन फार पीस, रन फार अबुझमाड़ थीम पर प्रथम मैराथन दिनांक 10 जनवरी 2019 को आयोजित किया गया। पहली मैराथन रन फार पीस, रन फार अबुझमाड हाफ मैराथन, पुरूष वर्ग के लिए 21 किमी और महिला वर्ग के लिए 05 किमी का आयोजन कराया गया।

इस मैराथन में पुरूष वर्ग में प्रथम स्थान पर मोसेज केनिया और द्वितीय स्थान पर हरसिंह उत्तराखण्ड रहे जबकि महिला वर्ग में डिंपल सिंह लखनउ के साथ प्रथम और श्यामलसिंह ;पश्चिम बंगालद्ध द्वितीय स्थान में रही। मैराथन में भाग लेने वाले दोनो ही वर्ग के प्रतिभागी प्रथम पांच पुरूष और प्रथम पांच महिला को क्रमशः एक लाखए पचास हजार तीस हजार, बीस हजार और दस हजार का ईनाम दिया गया था। इस आयोजन के सफलता के फलस्वरूप आम नागरिकों, जनप्रतिनिधियों के अनुरोध पर कलेक्टर पीएस एल्मा एवं पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग द्वारा इसे आगे बढ़ाते हुए निरंतर आयोजित करने का संकल्प लिया जाकर मैराथन का द्वितीय आयोजन पुनः जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन और भिलाई इस्पात संयंत्र के सौजन्य से दिनांक 08 फरवरी 2020 को रन फार पीस, रन फार अबुझमाड हाप मैराथन, 21 किण्मी का आयोजन कराया गया। जिसमें 18 राज्यों के लगभग 11292 धावकों ने पंजीयन कराया, वहीं 09 विदेशी धावको ने भी इस मैराथन में भाग लिया, ये सभी प्रतिभागी केन्या देश के निवासी थे। इस मैराथन में पुरूष वर्ग में प्रथम स्थान पर शंकर मानथापा मेघालय 1घण्टा 2मिनट और द्वितीय स्थान पर साइमन ;केन्या 1घण्टा 5मिनटद्ध रहे जबकि महिला वर्ग में एलीसा ;केन्या, 1घण्टा 11मिनट के साथ प्रथम और डिम्पल ;लखनउ द्वितीय स्थान में रही।

मैराथन ने अबुझमाड़ को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने में कारगर साबित हुआ है वहीं नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के लोग पुलिस और प्रशासन के कार्यशैली से परिचित होकर पुलिस प्रशासन से जूडकर नक्सलवाद के खिलाफ बौद्धिक रूप से खडा हुए हैं। फलस्वरूप पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग के प्रस्ताव पर अमल करते हुए कलेक्टर धर्मेश कुमार साहू द्वारा मैराथन के तीसरे आयोजन को अबुझमाड़ महोत्सव . तृतीय अंतर्राष्ट्रीय माड़ मैराथन . 2021 के रूप में आयोजित करने की सहमति दी गई। महिनों चलने वाले इस अबुझमाड़ महोत्सव के माध्यम से मावा नारायणपुर, युवा नारायणपुर के थीम पर अंदरूनी और पहुंच विहिन क्षेत्र के आम नागरिकों और युवाओं को जोडकर उन्हें सरकारी कार्यालयों का भ्रमण कराते हुए सरकार के कार्यशैली को बताया जा रहा है, पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग के निर्देशानुसार जिला नारायणपुर के समस्त पुलिस थाना और केन्द्रीय सशस्त्र बल के कैम्पों में 5.5 किलोमीटर के दौड़ आयोजित कर नक्सल क्षेत्र के नागरिकों को खासकर युवा और छात्रों को शासन से जोडने का प्रयास किया जा रहा है। इस दौड़ में शामिल विजेता धावकों को नगद ईनाम, सर्टिफिकेट और खेल सामाग्री दिये जा रहे हैं वहीं दौड़ मे शामिल होने वाले अन्य धावकों और लोगों के लिए चाय, नास्ता भी कराया जा रहा है, इच्छूक लोगों का तृतीय अंतर्राष्ट्रीय माड़ मैराथन . 2021 के लिए निःशूल्क आनलाईन पंजीयन किया जा रहा है ताकि उन्हें देश.विदेश के ख्याति प्राप्त धावकों से प्रतियोगिता करने का अवसर प्राप्त हो सके। बस्तर रेंज के पुलिस महानिरीक्षक श्री सुंदरराज पीण् द्वारा आयोजन से आम लोगों के मन में पुलिस प्रशासन के प्रति बने सकारात्मक छवि को देखते हुए बस्तर संभाग के समूचे पुलिस थाना एवं कैम्पों में इसके आयोजन हेतु रेंज के समस्त पुलिस अधीक्षकों को निर्देशित किया गया है।

अबुझमाड़ महोत्सव . तृतीय अंतर्राष्ट्रीय माड़ मैराथन . 2021 के तहत् हर दिन लगभग 10 गांव के युवाओं, छात्रों और लोगों को जिला मुख्यालय बुलाकर उन्हें उनके मानव अधिकारों और आवश्यक कार्यों के निपटारा के लिए जागरूक करने का प्रयास किया जा रहा है। अबुझमाड महोत्सव के अंतर्गत दिनांक 12 फरवरी 2021 को जिला मुख्यालय में पेंटिग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया,

जिसमें लगभग 250 प्रतिभागियों ने भाग लेकर दीवारों में आदिवासी जनजीवन, माड़ मैराथन और स्वच्छ भारत थीम पर अपनी पेंटिग बनाकर मिशाल कायम किया वहीं दिनांक 14 फरवरी 2021 को 5 किलोमीटर प्रमोशनल सायकल रैली का आयोजन किया गया था, जिसमें जिला मुख्यालय सहित बस्तर के लगभग 500 से अधिक लोग शामिल हुए, दिनांक 14.02.2021 को आईजी बस्तर सुंदरराज पी द्वारा अबूझमाड़ महोत्सव . तृतीय अंतरराष्ट्रीय माड़ मैराथन 2021 के धावकों और वालेंटियर्स के लिए टी.शर्ट व मेडल का विमोचन किया गया। इसी क्रम में दिनांक 20.21 फरवरी 2021 को स्थानीय आडिटोरियम में मावा नारायणपुर, युवा नारायणपुर के तहत् विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें सैकड़ों प्रतिभागी और आम नागरिक शामिल हुए।

यह मैराथन अबूझमाड़ में शांति स्थापित करने के उद्देश्य से आयोजित की जाती है। वर्ष.2021 में शासकीय हाई स्कूल मैदान, नारायणपुर से बासिंग तक 21 किलोमीटर हाफ मैराथन का आयोजन किया जा रहा है। यह स्थान प्राकृतिक सुंदरता, वन, झरना और विशालकाय पर्वत श्रृंखलाओं से ओतप्रोत है। इस मैराथन का सबसे खास बात ये है कि 21 किमी के इस मैराथन में लगभग 20 प्वाईट बनाया गया है जहां पर सेल्फी प्वाईट, साउण्ड बाक्स, डीजे, गेट और रिफ्रेसमेंट प्वाइटंस बनाया जा रहा है जहां पर फुड, चाकलेट, नीबू पानी, ग्लुकोज, जूश, केला, इत्यादि की व्यवस्था होगी। इसके अलावा वाशरूम और रिलैक्सप्वाईट सहित फर्स्ट एड और चिकित्सकों की भी व्यवस्था उपलब्ध कराया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि यह मैराथन बस्तर का एकलौता और बड़ा अंतर्राष्ट्रीय मैराथन है जो अबुझमाड़ और बस्तर को विश्वस्तर पर ख्याति दिलाने में कारगर साबित हो रहा है, इस अंतर्राष्ट्रीय मैराथन में देश के प्रसिद्ध हस्तियां भी शामिल हो रहे हैं, विजयी प्रतिभागियों को माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा। इस मैराथन में महिला और पुरूष दोनो वर्ग के लिए पृथक.पृथक 05 पुरस्कार क्रमशः 1 लाख 21 हजार रूपये, 61 हजार रूपये, 31 हजार रूपये, 21 हजार रूपये और 11 हजार रूपये रखा गया है। मैराथन में शामिल होने वाले धावकोंध्प्रतिभागियों के लिए जिला प्रशासन और पुलिस प्रशासन, नारायणपुर द्वारा ठहरने और भोजन की निःशूल्क व्यवस्था उपलब्ध करायी जा रही है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि यह मैराथन जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन और स्थानीय प्रशासन द्वारा सामाजिक संगठनों, पंजीकृत गैर.पंजीकृत समितियों, पत्रकार साथियों, व्यापारिक संस्थानों और गणमान्य नागरिकों के सहयोग सक्रिय भागीदारी से आयोजित बस्तर का सबसे बड़ा मैराथन है जो विगत 03 वर्षों से हर साल पूरे उत्साह के साथ नारायणपुर में आयोजित किया जा रहा है। विगत वर्षों में हर साल 5 हजार से अधिक लोगों ने इस मैराथन में शामिल होकर आयोजन को सफल बनाने में अपना अहम योगदान दिया है, जिसमें देश.विदेश के धावक भी शामिल हैं।